नियंत्रण और रोकथाम

- झुंडों का सामूहिक टीकाकरण के माध्यम से बकरियों में प्लुरोन्यूमोनिया रोग का नियंत्रण और रोकथाम हो सकता है।
- भेड़ और बकरियों के बच्चे या मेमने में टीकाकरण करवाएं।
- साल में एक बार टीकाकरण जरूर करवाएं।
- टीकाकरण करने से पूर्व भेड़ बकरियों को कृमिनाशक दवा देना चाहिए।
- भेड़ और बकरियों को परिवहन, खराब मौसम आदि जैसे तनाव प्रदान करने वाली परिस्थितियों से मुक्त रखा जाना चाहिए।
- पशु परिसर की सफाई और कीटाणुशोधन करना चाहिए।
- अच्छी गुणवत्ता वाली घास और पूरक आहार बकरियों को प्रदान किया जाना चाहिए।
- अच्छा वेंटिलेशन और आश्रय प्रदान किया जाना चाहिए।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
डॉ. एस.एस. सिंह
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : +91–789746699
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/62

बकरियों में प्लुरोन्यूमोनिया रोग

डॉ. प्रमोद कुमार सोनी
डॉ. वी.पी. सिंह

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

बकरियों में प्लुरोन्यूमोनिया रोग

प्लुरोन्यूमोनिया बकरियों और कभी–कभी भेड़ की एक गंभीर बीमारी है। यह माइकोप्लाज्मा माइकोइडिस उप–प्रजाति कैप्री के कारण होती है। बकरियों में प्लुरोन्यूमोनिया सबसे गंभीर और अत्यधिक संक्रामक बीमारी माना जाता है। इससे भारी आर्थिक नुकसान होता है। वैसे तो ये बीमारी किसी भी उम्र में हो सकती है, लेकिन नवजात और कमजोर रोग–प्रतिरोधक क्षमता वाली बकरियाँ इसके चपेट में ज्यादा आती हैं। मृत्यु दर 60–100% के बीच होने के साथ रुग्णता को 100% माना जाता है।

बकरियों में प्लुरोन्यूमोनिया फैलने के कारण

- इसका का प्रकोप मौसमी बदलाव के दौरान ख़ासा बढ़ जाता है, जैसे भारी बारिश के बाद बढ़ी ठंड।
- बीमारी सांस में संक्रमित बूंदों के माध्यम से जानवरों के बीच निकट संपर्क में फैलता है।
- कई बार पशुओं के लम्बे परिवहन के दौरान भी वो इस बीमारी से संक्रमित हो जाते हैं।
- ठंडे, नम और भीड़भाड़ वाले वातावरण में रोगजनक लंबे समय तक बने रह सकते हैं और गंभीर प्रकोप का कारण बन सकते हैं।

रोग के लक्षण

- बकरियों में इस संक्रमण के अलग–अलग लक्षण देखे जाते हैं।
- तेज बुखार 105 डिग्री फॉरेनहाइट।
- गम्भीर खाँसी, नाक का बहना, साँस लेने में तकलीफ।
- सुस्ती, कमजोरी लगना।
- शरीर के वजन में कमी के लक्षण नजर आते हैं।
- नाक से झागदार स्राव।
- पीड़ित बकरियों के फेफड़े बहुत कठोर होने लगते हैं और उनका साँस लेना मुहाल हो जाता है।
- एनोरेक्सिया (भूख ना लगना)।
- रोग के अंतिम चरण में, बकरी चलने में सक्षम नहीं होती और अपने सामने के पैरों को चौड़ा करके खड़े होते हैं, और इसकी गर्दन विस्तारित और कड़ी होती है।

चित्र – प्लुरोन्यूमोनिया से प्रभावित बकरी के फेफड़े

रोग की जाँच

- पोस्टमार्टम परिक्षण, लेटेक्स एग्लूटिनेशन, और पोलीमरेज चेन रिएक्शन तकनीकों का विशेष रूप से उपयोग किया जाता है, रोग की पुष्टि करने के लिए।

रोग का उपचार

- किसी भी बकरी को कैप्राइन प्लुरोप्न्यूमोनिया होने का संदेह होने पर राज्य के पशु चिकित्सकों को तुरंत सूचित किया जाना चाहिए।
- कुछ एंटीबायोटिक दवाओं के साथ इलाज किया जा सकता है।
- कैप्राइन प्लुरोन्यूमोनिया के उपचार में टाइलोसिन या ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन प्रभावी एंटीबायोटिक है।
- सबसे पहले स्वस्थ बकरियों को बीमार भेड़ और बकरियों से अलग रखा जाना चाहिए ताकि रोग को नियंत्रित और फैलने से बचाया जा सके इसके बाद बीमार बकरियों का इलाज शुरू करना चाहिए।
- रोग संचरण और झुंड के नुकसान को कम करने के लिए सटीक निदान, सख्त जैव सुरक्षा और शीघ्र उपचार आवश्यक हैं।